पशुओं के चारे के लिए प्रमुख घास फसलों का महत्व

राजेश[1], विजेंद्र कुमार[1], दिनेश कुमार[2], यतीश के आर[3] एवं सुमित कुमार अग्रवाल[3]
[1]भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली
[2]शस्य विज्ञान अनुभाग, भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल (हरियाणा)
[3]भाकृअनुप–भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना (पंजाब)
संवादी लेखक का ई–मेलः rjshroshan579@gmail.com

परिचय

पशुधन भारतीय किसानो की आय का एक प्रमुख स्त्रोत है। विश्व में सर्वाधिक पशुधन की संख्या (536.8 मिलियन) भारत में है। हालाँकि पशुधन की उत्पादकता वैश्विक औसत से काफी कम है। इसका प्रमुख कारण हरा एवं सूखा चारे की कमी है। वर्तमान में भारत में क्रमशः 30.65 एवं 11.85% हरा एवं सूखा चारे की कमी है जो वर्ष 2050 तक 18.43 एवं 13.20% हो जाएगी। इस कमी को पूरा करने के लिए चारा फसलों की उत्पादकता में वृद्धि करना होगा। साथ ही, चारा फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल में भी वृद्धि करना पड़ेगा। चारा फसलों के अंतर्गत कृषि क्षेत्रफल काफी (4.6%) समय से स्थिर है, क्योंकि किसान अपनी उपजाऊ जमीन का उपयोग आर्थिक दृष्टि से उच्च आय अथवा लाभदायक/व्यावसायिक फसलें उगाने में करते है। अतः चारा फसलों का क्षेत्रफल बढ़ने के लिए हमें गैर परंपरागत क्षेत्र जैसे बंजर, कम उपजाऊ, पथरीली भूमि, खेत के मेड़, बलुई रेतिली मृद्दा तथा खेत का वो क्षेत्र जहां कोई फसल उगाई नहीं जाती, का उपयोग किया जाना चाहिए। इन क्षेत्रों के लिए एक तथा बहुवर्षीय घास चारा फसलें उपयुक्त है, क्योंकि ये कम उर्वरा क्षमता, बंजर भूमि इत्यादि पर कम लागत के साथ आसानी से उगाई जा सकती है। घास फसलों की एक बार बुवाई करने से औसतन 5 से 7 वर्ष तक उत्पादन देती है, जिससे किसान की आय में वृद्धि की जा सकती है। साथ ही हरे चारे की कमी को पूरा किया जा सकता है। भारत में प्रमुख रूप से उगाई जाने वाली एक वर्षीय तथा बहुवर्षीय चारा फसलें निम्नलिखित है, सेवण घास, धामण घास, लाम्प घास, मकरा घास एवं मूरट घास।

1. सेवण घास *(लेसियूरस सिंडिकस)*

सेवण एक बहुवर्षीय घास है जो पश्चिम राजस्थान के शुष्क क्षेत्रो तथा 100–350 मिमी वर्षा वाले क्षेत्रो में पाई जाती है। इसे कम वर्षा तथा रेतीली भूमि में भी आसानी से उगाई जा सकती है। विकसित जड़ तंत्र के कारण इसमें सुखा सहन करने की क्षमता पायी जाती है। भारत के अलावा सेवण घास मिस्र, सोमालिया, अरब व पाकिस्तान में भी पाई जाती है। भारत मे मुख्यतः राजस्थान, गुजरात, पंजाब व हरियाणा के शुष्क क्षेत्रो में पायी जाती है। इसको घासो का राजा भी कहते है क्योंकि ये बलुई मृदा में आसानी से उग जाती है। इसी कारण यह थार के रेगिस्तान में बहुतायत मिलती है। इसका तना उद्धव शाखा युक्त जो 1.2 मीटर तक लंबा होता है, पत्तीयाँ रेखा कार, 20–25 से.मी. लंबी तथा पुष्प गुच्छ 10 से.मी. लंबी होती है।

सेवण घास गायों के लिये सर्वोत्तम पौष्टिक चारा है। गायो के अलावा भैस व ऊंट भी इस घास को बड़े चाव से खाते है। छोटे पशु जैसे बकरी, भेड़ आदि इसको पुष्पन के समय बहुत पसंद करते है। सेवण घास से उच्च गुणवत्तायुक्त "हे" भी बनाया जा सकता है। परिपक्व अवस्था आने पर इसका तना सख्त हो जाता है तथा इसकी गुणवत्ता व पाचकता में भी कमी आ जाती है अतः परिपक्व घास को पशु कम पसंद करते है। इस घास से प्रति हेक्टेयर 50–75 क्विंटल सूखा चारा प्राप्त होता है।

2. धामण घास *(सेंचरस सेटिगेरस)*

यह शुष्क व अर्ध शुष्क क्षेत्रों में पाई जाने वाली एक प्रमुख बहुवर्षीय घास है जिसकी ऊंचाई 0.2 से 0.9 मीटर होती है। इसकी पत्तियों की लम्बाई 2 से 30 सेंटीमीटर तथा चौड़ाई 1.8 से 6.9 सें.मी. होती है। काला धामन घास दोमट से लेकर पथरीली भूमि में आसानी से पैदा होती है। इस घास में अत्यंत गर्मी व सूखा सहन करने की क्षमता होती है इसलिए यह कम वर्षा वाले क्षेत्रों में चारागाह विकसित करने के लिए सर्वश्रेष्ठ घास है। भारत में यह घास राजस्थान, गुजरात व पंजाब के शुष्क क्षेत्रों में पाई जाती है। इसकी बुवाई बरसात के मौसम में

करना बहुत अच्छा रहता है परंतु इस घास की बुवाई दिसंबर व जनवरी माह को छोड़कर साल भर आसानी से कर सकते हैं। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए 5–6 किलो बीज पर्याप्त रहता है। चारागाह स्थापित करने के लिए बीजों के अतिरिक्त पुराने चारागाह का भी जीर्णोद्धार भी कर सकते है। उसके पश्चात संपूर्ण क्षेत्र को चार भागों में बांटकर बारी–बारी से चराई करनी चाहिए। यह घास प्रति हेक्टर 40 से 50 क्विंटल सूखा चारा प्रदान करती है। इस घास से पाचकता युक्त हरा चारा भी प्राप्त होता है जिसको सभी पशु बड़े चाव से खाते हैं एवं 'हे' के रूप में भी सरंक्षित रख सकते हैं।

3. लाम्प घास *(एरिस्टिडा डिप्रेसा)*

यह संसार के उष्ण कटिबंधीय व शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रो में पायी जाने वाली एक वर्षीय घास है। भारत मे यह घास मुख्य रूप से गुजरात व राजस्थान में पायी जाती है। यह घास मुख्यतः कम वर्षा वाले शुष्क क्षेत्रो में पायी जाती है। इसे पर्वतो के ढाल व सड़को के दोनों तरफ उगी हुई देखी जा सकती है इस घास से 30–50 से.मी. लंबी शाखाये निकलती है। यह घास भेड़ो व बकरियो का मुख्य आहार है तथा ऊंट भी इसे बड़े चाव से खाते है।

4. मकरा घास *(इलुसिन इजिप्टिका)*

यह एक बहुवर्षीय घास है जिसे पहाड़ी व बंजर भूमि में आसानी से उगाई जा सकती है। इस खास का उत्पत्ति स्थल अफ्रीका है परंतु यह घास दुनिया के उष्ण व उपोष्ण कटिबंधीय लगभग सभी देशों में पाई जाती है राजस्थान के सभी ग्रामीण क्षेत्रों में यह आसानी से देखी जा सकती है। इस घास की शाखाएं ऊपर की ओर उठी हुई होती है जो 30 सें.मी. तक लंबी होती है। यह एक उत्तम पशु चारा है, जिसे सुखाकर 'हे' के रूप में खिलाया जाता है। यह घास अकाल के समय मे भेड़ बकरी आदि पशुओ के लिए मुख्य आहार है।

5. मूरट घास *(पेनिकम तुरजिडम)*

यह गुच्छेदार एकवर्षीय अथवा अल्पकालिक बहुवर्षीय घास है। इसका उत्पति स्थान अफ्रीका है। यह लगभग सभी उष्ण व उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में फैली हुई है। भारत में यह घास लगभग संपूर्ण भारत में पाई जाती है, परंतु मुख्यत उष्ण व उपोष्ण कटिबंधीय एवं शुष्क क्षेत्रों में पाई जाती है। यह घास मुख्यतः रेत के टीलों, बलुई रेत के मैदानों तथा थार के रेगिस्तान के कृषि क्षेत्रों जैसे गुजरात व राजस्थान में बरसात के मौसम में मुख्य रूप से पाई जाती है। मुरट घास के चारागाह स्थापित करने के लिए बरसात का मौसम सर्वोत्तम रहता है। इसके अलावा यह जंगली क्षेत्रों तथा सड़कों के किनारे पर पथरीली भूमि में पाई जाती है। इस घास का मुख्य गुण यह है कि रेत के धोरों के स्थानांतरण/अपरदन को रोकने में मुख्य भूमिका निभाती है।

इस घास की लम्बाई 75 सें.मी. होती है तथा इसका तना पतला, सीधा व लंबा होता है। पत्तिया रेखाकार 3 से 25 सें. मी. लंबी तथा 3 से 15 सें.मी. चौड़ी होती है। इसका चारा बहुत ही स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है जिसे पशु बड़े चाव से खाते हैं। यह घास भेड़, बकरी व ऊंटों का बहुत ही अच्छा पसंदीदा चारा है, इसलिए इन पशुओ को सीधा चारागाह में चराकर अथवा काट कर सुखाकर भी पशुओं को खिलाया जा सकता है। इसके अलावा, इस घास को सुखाकर 'हे' बनाकर भी सरंक्षित रख सकते हैं जिसे चारे की कमी में पशुओं को खिलाने के काम में ले सकते हैं। यह घास वर्ष भर में प्रति हेक्टेयर 20 से 30 क्विंटल सूखा चारा आसानी से पैदा कर देता है।

निष्कर्ष

भारत की प्रमुख एक वर्षीय एवं बहुवर्षीय घास चारा फसलों (सेवण घास, धामण घास, लाम्प घास, मकरा घास एवं मूरट घास) को बंजर भूमि, कम उपजारु भूमि, पथरीली भूमि, खेत के मेड़, बलुई रेतिली मृद्दा, थार के रेगिस्तान के कृषि क्षेत्रों तथा शुष्क एवं अर्धशुष्क क्षेत्रों में आसानी से उगाया जा सकता है। इससे ना सिर्फ चारे की कमी को पूरा किया जा सकता है, बल्कि वर्षभर हरे एवं सूखे चारे की उपलब्धता के साथ –साथ किसान की अतिरिक्त आय में वृद्धि की जा सकती है।

सारणी 1. प्रमुख घास फसलों में चारे की गुणवत्ता का रासायनिक संघटन।

	कच्ची प्रोटीन (%)	ईथर निष्कर्ष (%)	राख (%)	कच्चा रेशा (%)	नत्रजन रहित निष्कर्ष (%)
लेसियूरस सिंडिकस (सेवण घास)	6–7	1–2	18–20	32–34	40–42
सेंचरस सेटिगेरस (धामण घास)	4–5	1–2	16–18	34–35	43–45
एरिस्टिडा डिप्रेसा (लाम्प घास)	5–6	–	12–13	37–38	45–47
इलुसिन इजिप्टिका (मकरा घास)	6–7	0.8–1	6–7	40–42	–
पेनिकम तुरजिडम (मूरट घास)	6–7	0.8–1	7–8	42–45	–

निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषा को मूल, बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।

–भारतेन्दु

फल के आने से वृक्ष झुक जाते हैं, वर्षा के समय बादल झुक जाते हैं, संपत्ति के समय सज्जन भी नम्र होते हैं। परोपकारियों का स्वभाव ही ऐसा है।

– तुलसीदास